UP Board Notes Class 7 Sanskrit chapter 9 सुभाषितानि

शब्दार्थाः- क्षणशः = प्रतिपल, चिन्तयेत् = चिन्तन करना चाहिए, नार्जिता = नहीं प्राप्त किया, तुष्यन्ति = तुष्ट होते हैं, वक्तव्यम् = बोलना चाहिए, अनृतम् = झूठ, जाड्यंधियः = बुद्धि की जड़ता, पापमपाकरोति = पापों को दूर करती है, तनोति = फैलाती है, दिक्षु = दिशाओं में, पुंसाम् = व्यक्तियों का।।

क्षणशः ..... धनम् ॥1॥

हिन्दी अनुवाद – एक एक पल और एक एक कण से विद्या और धेने के लिए सोचना चाहिए। क्षण त्यागने पर विद्या कहाँ और कण त्यागने पर धन कहाँ?

प्रथमे ..... करिष्यति ॥2॥

हिन्दी अनुवाद – पहले विद्या नहीं प्राप्त की, दूसरे धन नहीं कमाया, तीसरे पुण्य नहीं कमाया (प्राप्त किया) तो फिर चौथे और क्या करेगा अर्थात् फिर कुछ फायदा नहीं।

सर्वतीर्थमयी ..... पूजयेत् ॥3॥

हिन्दी अनुवाद – माता समस्त तीर्थों का रूप होती है और पिता सभी देवताओं के। इसलिए सब यत्नों से माता-पिता की पूजा करनी चाहिए।

प्रियवाक्यप्रदानेन ..... दरिद्रता ॥4॥

हिन्दी अनुवाद – सभी प्राणी प्रिय वाक्य बोलने से सन्तुष्ट होते हैं, इसलिए प्रियवचन ही बोलना चाहिए, बोलने में भला कैसी दरिद्रता?

सत्यं ब्रूयात् ..... सनातनः ॥5॥

शब्दार्थाः- अनृतम् = झूठ।।

हिन्दी अनुवाद – सत्य बोलना चाहिए। प्रिय बोलना चाहिए। अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए। प्रिय झूठ नहीं बोलना चाहिए। यही सनातन धर्म है।

जाड्यं ..... पुंसाम् ॥6॥

हिन्दी अनुवाद – सत्संगति बुद्धि की जड़ता (मन्दता) दूर करती है; वाणी में सच्चाई उत्पन्न करती है; मान बढ़ाती है; पाप दूर करती है; लक्ष्मी (सम्पत्ति) की वृद्धि करती है; चारों दिशाओं में कीर्ति फैलाती है; कहो सत्संगति व्यक्तियों का क्या नहीं करती। अर्थात् सत्संगति से व्यक्ति सदा सुखी रहते हैं।

https://www.evidyarthi.in/